RESEARCH PAPER | Education | Volume : 4 | Issue : 7 | July 2014 | ISSN - 2249-555X

दुख ही जीवन की कथा रही -निराला की आत्मकथा के विशेष सन्दर्भ में
(Dukh Hi Jeevan Ki Katha Rahi - Nirala Ki Aatmakatha Ke Vishesh Sandarbha Me)

KEYWORDS: निराला, आत्मकथा ,दाम्पत्य,दुख।

Dr. kiran Grover

DAV College, Abohar, Punjab, INDIA, PIN:152116

ABSTRACT आत्मकथा अधिकाधिक मानवीय गुणों से संवलित होने के कारण साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है। आत्मकथा एक जीवन बिन्दू पर पहुँचे कथानायक के लिए अपने विगत जीवन का पुनरावलोकन है। साहित्यकारों की आत्मकथाओं में निरूपित दाम्पत्य सम्बन्धों का अध्ययन उनके परिचय को समग्रता प्रदान करता है । आत्मकथाकारों ने पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण में किस प्रकार जीवन–निर्वाह किया है।डॉ॰ सूर्यप्रकाश दीक्षित जी ने 'निराला की आत्मकथा' के संकलन व सम्पादन में निश्चित ही प्रशंसनीय प्रतिमान प्रस्तुत किया जिसका अनुवर्त्तन परवर्ती लेखकों के लिए असंभव प्रतीत होता है। निराला जी ने शब्द विन्यास से पत्नी की भावनाओं का निरीक्षण कर विनोदी मुद्रा में संवादों का अवलम्बन लेकर पति–पत्नी के पारस्परिक समानधर्मिता एवं विपरीत आचरण का विवेचन किया है। निराला जी के कृतित्व, व्यक्तित्व विश्लेषण के लिए आत्मकथा का पारायण अपरिहार्य है। निराला जी के जीवन के सुख–दुख की अपरिमित कथा इस आत्मकथा में पर्यवसित है।

आत्मकथा अधिकाधिक मानवीय गुणों से संवलित होने के कारण साहित्य की महत्त्वपूर्ण विधा है जिसमें आत्म प्रकाशन, आत्मनिरीक्षण, आत्मविकास करने के लिए आत्मकथाकार को उपयुक्त श्रम संधान करना पड़ता है। आत्मकथा एक जीवन बिन्दू पर पहुँचे कथानायक के लिए अपने विगत जीवन का पुनरावलोकन है।[1]आत्मकथा को लिखने का निर्णय लेना जीवन की निर्णायक घटना है, क्योंकि आत्मकथा में एक ओर निजी स्मृतियों को अंकित करने की आकांक्षा है तथा दूसरी ओर विसंगतियों से भरे संसार में निजी 'स्व' को प्रस्थापित करने का प्रयास भी।[2] आत्मकथा साहित्य का वह प्रकार है, जिसमें लेखक अपने जिये हुए जीवन का, मुख्य घटनाओं का विवरण सत्य एवं यथार्थ की भूमिका पर आत्मनिरीक्षण एवं परीक्षण करते हुए प्रस्तुत करता है।[3]

जब विगत जीवन के अनुभव और अनुभूतियाँ साहित्य स्रष्टा को इतना उद्वेलित व विवश कर देती हैं कि उन्हें अपने अन्तर्मन के बाहर उड़ेल देने के अतिरिक्त और कोई विकल्प शेष नहीं रह जाता, प्रायः तभी श्रेष्ठ आत्मकथाएँ जन्म लेती हैं।[4] साहित्यकारों के जीवन रहस्य को जानने का मानव–मन में सहज कौतूहल होता है। कबीर, तुलसी, सूर आदि प्रषस्त लेखकों का जीवन परिचय कल्पनाओं, किंवदंतियों के घेरे में आबद्ध है। यदि इस युग में आत्मकथा विधा का विकास होता तो आज हमारी पाठकीय जिज्ञासा निराष न होती। विष्वसनीयता व यथार्थ–बोध साहित्यकारों की आत्मकथा की विषिष्ट उपलब्धियाँ हैं।[5]

आत्मकथा का उद्देष्य बाह्योन्मुख होने की अपेक्षा अन्तर्मुख होता है जिस में आत्मनिरीक्षण, आत्मपरीक्षण, आत्मविष्लेशण की प्रधानता रहती है। इस प्रक्रिया में वह वैयक्तिकता से सामाजिकता की ओर उन्मुख होता है।[6] आत्मकथा साहित्य यह अपेक्षा रखता है कि लेखक अपने समस्त गुणों और अवगुणों का सम्यक् निरूपण करें लेकिन यह कार्य दुधारी तलवार पर चलने के समान कठिन व्यवसाय है। साहित्यकारों की आत्मकथाएँ तथ्याश्रिता के आधार पर अपना पृथक् रूपभेद निर्मित करती हुई प्रमाता के अन्तःकरण पर विषेष छाप छोड़ती हैं। साहित्यकारों की आत्मकथाओं में निरूपित दाम्पत्य सम्बन्धों का विषेश अध्ययन जहाँ उनके परिचय को समग्रता और सार्थकता प्रदान करता है।

दाम्पत्य जीवन में विवाह एक आधारशिला है। आत्मकथाकारों ने पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण में किस प्रकार जीवन–निर्वाह किया है। दाम्पत्य सम्बन्धों में असन्तुष्टि को साहित्यकारों ने आत्मकथाओं में कितना बेबाकी से स्वीकार किया है।[7]साहित्यकारों ने आत्मकथाओं में भावनाओं की सघनता के माध्यम से अनुभव जगत की अनुभूतियों को संस्पर्शित किया है। आत्मकथा में अपने सम्बन्धों के सन्दर्भ में कथाकार के मुख से निस्सृत वाक्य अधिक विष्वसनीय होते हैं तथा पाठक को साधारणीकरण की स्थिति तक पहुँचाते हैं।

गृहस्थाश्रम सभी आश्रमों का द्वार है। विधि द्वारा विवाह के उपरान्त ही स्त्री और पुरुष को पति–पत्नी का दर्जा दिया जाता है और पति–पत्नी को दम्पती माना गया हैं। दाम्पत्य जीवन में विवाह एक आधारशिला है। विवाह के माध्यम से पति–पत्नी गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट होते हैं;। पति–पत्नी के पारस्परिक आकर्षण को मर्यादित करने का उपक्रम पारिवारिक ढांचे की आधारशिला के रूप में दाम्पत्य सम्बन्धों में विद्यमान रहता है।[8] प्राचीन काल में विवाह धार्मिक संस्कार माना जाता था। लेकिन अब वैयक्तिक सम्बन्ध अपितु 'अनुबन्ध' मानने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। साहित्यकारों ने आत्मकथाओं में सत्य–प्रतिपादन, यथार्थ चित्रण, स्मृति समुज्ज्वलता, वैयक्तिकता आदि गुणों का अवलम्बन लेकर नैतिक परम्पराओं को निर्ममता से झुठलाया है और अनैतिकता को महत्त्वान्वित किया है।

डॉ॰ सूर्यप्रकाष दीक्षित जी ने 'निराला की आत्मकथा' के संकलन व सम्पादन में निष्चित ही प्रषंसनीय प्रतिमान प्रस्तुत किया जिसका अनुवर्त्तन परवर्ती लेखकों के लिए असंभव प्रतीत होता है। निराला जी ने अपने पिता के क्रोधी स्वभाव का विश्लेषण किया है–''मारते वक्त पिता जी इतने तन्मय हो जाते थे कि उन्हें भूल पाता कि दो विवाह के बाद पाए हुए अकेले पुत्र को मार रहे हैं। मैं भी स्वभाव न बदलने के कारण मार खाने का आदी हो गया था..... और प्रहार की हद भी मालूम हो गई थी।''[9]

इस आत्मकथा में निराला जी के जीवन की स्मृतियाँ, विवाह, दाम्पत्य भाव आदि से सम्बन्धित घटनाओं के साथ–साथ साहित्यिक जीवन पर भी प्रकाष डाला गया है। निराला जी ने 'मेरी पहली ससुराल यात्रा' उपषीर्शक के अन्तर्गत वैवाहिक जीवन पर अपनी भाव धारा का प्रकाषन किया है–''वंष मर्यादा की रक्षा के लिए बचपन में ही हो गया था..... एक झोंपड़े में एक रात हम लोग कैद किये गये. ..... खैर हम पूरे जवान हैं, हम दोनों समझे।''[10]

निराला जी ने आत्मकथा के अन्तर्गत अपनी सास के लाड प्यार, समर्पण, सौहार्द की भावना का सम्यक् विश्लेषण करते हुए अपनी पत्नी के लावण्य को परखने की इच्छा का भी प्रभावी वर्णन किया है कि माँ अगर चाहे तो बेटी के व्यवहार में अवश्य परिवर्तन ला सकती है–''सासुजी ने मुझे एक सौ एक नम्बर दिये हैं.....–''मेरे षयन कक्ष में मोटी बत्ती लगा कर रख दी ताकि उनकी पुत्री के अनन्य लावण्य को मैं पूरी सार्थकता के साथ देख सकूँ।''[11]

अपनी पत्नी की मनोभावनाओं व पत्नी से मिलने की आतुरता का निराला जी ने संवेदनमयी अभिव्यंजन किया है–''दिन भर विराग रहता था, रात को श्रीमती को देखने के साथ अनुराग में परिणित हो जाता। श्री मती जी मौन साधे हुए अपने मनोभावों की मारें सहती थी।''[12]

परिवारिक संगठन के लिए पति–पत्नी का माहात्म्य सुनिश्चित किया जाता है। आदर्श पति–पत्नी को अहंकारी न बनकर परस्पर सम्मान, समानधर्मिता की भावना का प्रतिपालन करना चाहिए। पति की दृष्टि में पत्नी सम्माननीय व पत्नी की दृष्टि में पति आदरणीय होना चाहिए। निराला जी ने पत्नी की ज्ञान धारा को स्पष्ट शब्दों से अभिव्यक्त किया है कि उनकी पत्नी खडी बोली के साहित्यिको की बीसियों के नाम गिना देती है–''मैनें कहा–'हिन्दी मुझे नहीं आती' उन्होंने कहा–बस, तुम खड़ी बोली का क्या जानते हो ?..... तब मैंने खड़ी बोली का नाम भी नहीं सुना था।''[13]

पति–पत्नी में काम सम्बन्ध तभी उत्तम माना जाता है जो परस्पर प्रेम पर आध ाारित हो। यौन सम्बन्धों के प्रयोजन निमित्त आनन्दोपलब्धि का पति–पत्नी में अनिवार्य आकर्षण होता है। पति–पत्नी के साहचर्य भाव से पारस्परिक हित चिन्तन करते हुए दोनों अपने व्यक्तित्व का परिश्कार करते हैं। निराला जी ने शब्द विन्यास से पत्नी की भावनाओं का निरीक्षण कर विनोदी मुद्रा में संवादों का अवलम्बन लेकर पति–पत्नी के पारस्परिक समानधर्मिता के स्वर को मुखरित किया है–''मैंने बड़े स्नेह के स्वर से कहा–'मेरी अकेली इच्छा से तो तुम यहाँ सोती नहीं, तम अपनी इच्छा की भी सोच लो।'.....यह दूसरा विवाह हरगिज़ न करेगें..... ।''[14]

निराला जी ने अपने आत्मविश्लेषण में रचना प्रक्रिया का संष्लेषण करते हुए जीजा–साले के सम्बन्धों की आत्मीयता का विवेचन किया है–''साले साहब भीतर थे। बाहर निकले। कहा–जीजा कुल्ली सख्त बीमार है आप बड़े मौके से आए, मुलाक़ात हो जायेगी।''[15]

विपरीत आचरण करनेवाली स्व–प्रकृत्ति का भी विवेचन निराला जी ने किया है। इन्होंने पत्नी के अत्यधिक आग्रह पर मांस भक्षण परित्यक्त किया–"तुम मांस खाना छोड़ दो। ..... मेरी पत्नी को मेरे स्वास्थ्य का भय नहीं था, जितनी प्रसन्नता मेरे मांस छोड़कर भारतीय बन जाने की थी।"[16]

Volume : 4 | Issue : 7 | July 2014 | ISSN - 2249-555X

मांस भक्षण की वृत्ति के सन्दर्भ में पत्नी के व्यवहार की प्रतिकूलता का भी प्रतिपादन निराला जी ने किया है एवम् पत्नी के समझाने पर मांस खाना तो छोड़ दिया लेकिन 'विश्रामसागर' की उक्ति को पढ़कर पुनः मांस खाने की इच्छा जागृत हुई, इसी कामना को पूर्ण करने हेतु पत्नी के क्रोध व उनकी वाग्ध ाारा का सुश्ठू अभिव्यंजन किया है–''शाम को बाज़ार से आधा सेर मांस तोल लाया........ श्रीमती जी दंग........ श्रीमती जी रूमाल में खून के धब्बे देखकर समझ गई......... उन्होंने कहा–''तो मुझे मेरे मायके छोड़ आओ।''[17]

निराला जी ने अक्खड़ प्रवृत्ति के स्वामी होकर पारिवारिक मुद्रा को अस्त व्यस्त किया। पत्नी मनोहरादेवी निराला जी के मांस भक्षण से अत्यधिक व्यग्र थी ;जिसका स्पष्ट आलेख निराला जी ने किया है–''श्रीमती जी ने कहा–'खुद पकाते ही हो, अपने मांस वाले बरतन अलग कर लो और जिस रोज़ मास खाओ। उस रोज़ मुझे न छुओ और न घर के और बरतन और तीन रोज़ तक कच्चे घड़े नहीं छूने पाओगे'।''[18]

विवाहोपरान्त पत्नी के भरण पोषण की जिम्मेदारी, कर्त्तव्य का निर्वहण, उदारता, क्षमा आदि भावनाएँ निराला जी के परिवार में सुरक्षित न रह सकी, जिसकी शब्दबद्ध अभिव्यक्ति निराला जी ने की–''श्रीमती चली गई। पत्र–प्रेम इसी तरह तीन चार साल काटे ,चार महीने मेरे यहाँ, रहती आठ महीने मायके।"[19]

परिवार के प्रति उत्तरदायित्वहीनता की भी निराला जी ने सवाक् अभिव्यंजना की है–''एक बार मैं अपने चिरंजीव को आम खिलाने के विचार से लिवा आने के लिए ससुराल गया। एक बार लड़के ने जवाब दिया–'मुझे मामा के यहाँ छोड़ आइए।' मैंने चिरंजीव को नाई के साथ भेज दिय।'[20]

अपनी पत्नी की मृत्यु पर निराला जी ने अपने स्वर के परास्त होने पर भी निम्न षब्दों में पत्नी के प्रति उद्गारों को व्यक्त किया है–''मेरे जड़ हाथ को अपने चेतन हाथ से उठाकर दिव्य श्रृंगार की पूर्ति की, वह सुदक्षिणा स्वर्गीय प्रिया प्रकृति दिव्यधामवासिनी हो गई।''[21]

इस आत्मकथा में निराला जी ने जीवन स्मृतियो, अनुभवों व दाम्पत्य भावधारा व पत्नी के मृत्य लोक गमन उपरान्त आने वाली कठिनाइयों का वर्णन करके पारिवारिक अवस्था का सत्यता के साथ अनुस्थापन किया है–''मेरी और मेरी दिव्यधामवासिनी धर्म पत्नी का सम्बन्ध पंड़ितो ने पत्र देखकर जोड़ा था.......... विवाह के पष्चात् मेरी और उनकी प्रकृति वैसे ही मिली जैसे पंडितों की पोथियों के पत्र एक–दूसरे से मिलते हैं।''[22]

निराला जी ने शब्द विन्यास से पत्नी की भावनाओं का निरीक्षण कर विनोदी मुद्रा में संवादों का अवलम्बन लेकर पति–पत्नी के पारस्परिक समानधर्मिता के स्वर को मुखरित किया है एवम् विपरीत आचरण करने वाली स्व–प्रकृति का भी विवेचन किया है।इस आत्मकथा में निराला जी ने जीवन स्मृतियो, अनुभवों व दाम्पत्य भावधारा व पत्नी के मृत्य लोक गमन उपरान्त आने वाली कठिनाइयों का वर्णन करके पारिवारिक अवस्था का सत्यता के साथ अनुस्थापन किया है। निराला जी के कृतित्व, व्यक्तित्व विश्लेषण के लिए इस आत्मकथा का पारायण अपरिहार्य है क्योंकि निराला जी के जीवन के सुख–दुख की अपरिमित कथा इस आत्मकथा में पर्यवसित है–

दुख ही जीवन की कथा रही,

क्या कहूँ , आज जो नहीं कही।

REFERENCE

1 नारायण विष्णु शर्माः हिन्दी आत्मकथा, पुस्तक संस्थान, कानपुर, 1978 द्य 2 विनीता अग्रवालः हिन्दी आत्मकथाएँ : सिद्धान्त एवं स्वरूप विश्लेषण, सचिन प्रकाशन, 1989, पृ0 19। द्य 3 विश्व बन्धु 'व्यथित': हिन्दी का आत्मकथा साहित्य, राधा प्रकाशन, दिल्ली, 1989, पृ0 150। द्य 4 कमलेश सिंहः हिन्दी आत्मकथा : स्वरूप एवं साहित्य, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1989, पृ0 5। द्य 5 भगवान शरण भारद्वाज' हिन्दी जीवनी साहित्य सिद्धान्त और अध्ययन, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0 61। द्य 6 नारायण विष्णु शर्माः हिन्दी आत्मकथा, पुस्तक संस्थान, कानपुर, 1978, पृ0 117। द्य 7 बैजनाथ सिंहलः हिन्दी विधाएं स्वरूपात्मक अध्ययन, हरियाण ाा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, 1988 पृ0 186। द्य 8 साधना अग्रवालः वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य जीवन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995 , पृ0 13। द्य 9 सूर्यकान्त त्रिपाठी निरालाः निराला एक आत्मकथा, सं॰ सूर्य प्रकाश दीक्षित, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ, 1970, पृ0 10। द्य 10 वही, पृ0 17 द्य 11 वही, पृ0 22 द्य 12 वही, पृ0 41 द्य 13 वही, पृ0 38 द्य 14 वही, पृ0 40 द्य 15 वही, पृ0 40 द्य 16 वही, पृ0 40 द्य 17 वही, पृ0 102 द्य 18 वही, पृ0 106 द्य 19 वही, पृ0 22 द्य 20 वही, पृ0 37 द्य 21 वही, पृ0 40 द्य 22 वही, पृ0 8 द्य